आत्म चिंतन का ये समय....

(आदरणीय पण्डित कैलाशचन्द जैन कृत
जैन-सिद्धान्त प्रश्नोत्तरमाला के सातवें भाग से संकलित)

आत्म चिंतन का ये समय आया।
पाके नरतन क्या खोया क्या पाया ॥ टेक ॥

हम जिसे ज्ञान-ज्ञान कहते हैं।
हमको इन्द्रियों ने है भरमाया ॥1 ॥

देखो पर्याय तो है क्षणभंगुर।
फिर भी तू पर्याय में इतराया ॥2 ॥

तू तो टंकोत्कीर्ण ज्ञायक है।
बस यही तू समझ नहीं पाया ॥3 ॥

एक क्षण निज में अब ठहर जाओ।
आखरी क्षण बस अब यही आया ॥4 ॥